1 समर्पण

इस कविता में कवि देश के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देना चाहते हैं। मातृभूमि के लिए तन, मन, गान, प्राण, जीवन, स्वप्न और आयु का प्रत्येक क्षण समर्पित करके भी कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें देश के लिए कुछ और भी समर्पित करना चाहिए। कविता का उद्देश्य मातृभूमि के प्रति प्रत्येक व्यक्ति में समर्पण, त्याग और श्रद्धा की भावना जागृत करना है।

देश के प्रति हमेशा वफ़ादारी करनी चाहिए। —मार्क ट्वैन

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को, लगाओ न देरी,
बाँध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार-घर, आँगन क्षमा दो
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

सुमन अर्पित, चमन अर्पित,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

—श्री रामावतार त्यागी